Paper Code : AS-2696

MODEL ANSWER

B.A. (Hon's) Third Semester Examination, 2013

POLITICAL SCIENCE

Paper : VI[th] Comparative Government & Politics (Part-I)

SECTION- A

QN. 1.

(i) — France फ्रांस

(ii) — Six छः

(iii) — James Bryce (a) जेम्स ब्राइस

(iv) — Political Socialisation (a) राजनीतिक समाजीकरण

(v) — Prisioners (d) बंदी

(vi) — Technical (d) तकनीकि

(vii) — Adhesive Party System (d) चिपकनेवाली दलव्यवस्था

(viii) — Jai Prakash Narayan जय प्रकाश नारायण

(ix) — Edam Smith एडम स्मिथ

(x) — Politics and Market (b) पालिटिक्स एंड मार्केट

SECTION – B

Ans. (2)

DIMENSIONS OF POLITICAL CULTURE

Political Culture is a pattern of orientations towards Political objects. It is also a sign of a stage where people accompanied in a political Environment.

- According to Almond and Verba, There three dimensions :—

① Cognitive Orientation

- Knowledge of Political Subjects/Matter and alertness.

② Affective Orientation

- passion and Sentiments towards these Subjects.

③ Evaluative Orientation

- Value judgement of a person towards these subjects.

आमण्ड और वर्बा के अनुसार राजनीतिक संस्कृति के आयाम :—

राजनीतिक संस्कृति का अर्थ है राजनीतिक विषयों के प्रति अभिविन्यासों का प्रतिमान अर्थात् समाज का कोई भी सदस्य अपने राजनीतिक पर्यावरण के संदर्भ मे अपने आप को कहाँ रखता है? यह अभिविन्यास तीन प्रकार का होता है :—

① ज्ञानात्मक अभिविन्यास : राजनीतिक विषयों का ज्ञान और उसके अस्तित्व के प्रति सजगता.

② भावात्मक अभिविन्यास : इन विषयो के प्रति व्यक्ति के मन मे पैदा होने वाले आवेग

③ मूल्यपरक अभिविन्यास : इन विषयों के बारे मे व्यक्ति का मूल्य निर्णय.

Q.No (3)

Essay on Bi-party System

- Write an Introduction about Political Parties, Genesis of Political Parties and types of Political Parties.
- Existence of Two Political Parties in Britain and U.S.A.
- In Parliamentary System, two Political Party System is the best for Political Stability. If one Governs, Second does watch, respectively.
- India and major signs of evolving two political parties.
- Conclusion: Two Political Party System is very fruitful for any Parliamentary System. It strengthens democracy and empowers people.

द्विदलीय व्यवस्था पर एक निबंध

- राजनीतिक दल क्या होते है? इनकी उत्पत्ति कैसे होती है और कितने प्रकार के होते है?, इन प्रश्नो को हल करते हुए प्रस्तावना मे ब्रिटेन एवं अमरीका मे द्विदलीय व्यवस्था ~~की ओर~~ को लिखेंगें।
- संसदीय प्रणाली मे द्वि-दलीय व्यवस्था लोकतंत्र को मजबूत करने वाली होती है। एक दल जहां शासन करता है, वही दूसरा दल विपक्ष के रूप मे शासन की गतिविधि पर नज़र रखता है।
- भारत मे द्विदलीय व्यवस्था के उभार पर लिखेंगें।
- निष्कर्ष: द्विदलीय व्यवस्था लोकतंत्र के लिए शुभ और लोगो को मजबूत करने वाला है।

Q.No.4 Essay on Social Movement in India

- The term is coined by Saint Simon (1760-1825)
- India is a vast, diverse and heterogenous society, that's why social problems exist. In every section of society, we see a fight for a cause.
- Peasant Movement:
  - Against Raitwadi
  - Bengal (1870)
  - Punjab (1890-1900)
  - Champaran (1917)
  - Telangana (1946-48)
  - Naxalbadi (1967)
- Women's Movement:
  - Sati Pratha & Brahm Samaj
  - Theosophical Society and Annie Besant
  - Savitri Bai Fule and Women Education
- Dalit Movement:
  - Satyasodhak samaj and Jyotiba Fule.
  - Untouchability and Dr. Ambedkar's effort
  - Mahatma Gandhi and Harijans.
- Tribal Movement:
  - Birsa Munda and Oraon Movement
  - Rani Gidalu and Naga Problem.

भारत में सामाजिक आंदोलन

- सेंट साइमन (1760-1825) द्वारा 'सामाजिक आंदोलन' शब्द को प्रथम प्रयोग में लाया गया।

- भारत एक बड़ा, विविध और असमजातीय समाज वाला देश है इसलिए यहां कई सामाजिक समस्यायें पायी जाती हैं। समाज के हर भाग में कोई न कोई समस्या रही है, इसीलिए अनुकूल परिवर्तन हेतु सामाजिक आंदोलन होते रहे हैं। जैसे कि—

- किसान आंदोलन.
  - दक्षिण में रैय्यतवाड़ी प्रथा & नीलाम्ब आंदोलन
  - बंगाल (1870) में किसान आंदोलन
  - पंजाब (1890-1900), तेलंगाना (1946-48) एवं चंपारण (1917) में किसान आंदोलन।
  - 1967 मे नक्सलबाड़ी मे शुरू हुआ किसान विद्रोह

- महिला आंदोलन:
  - सतीप्रथा एवं ब्रह्म समाज का उल्लेख करें।
  - थियोसोफिकल सोसाइटि एवं एनी बेसेंट
  - सावित्रि बाई फूले एवं महिला शिक्षा

- दलित आंदोलन:
  - सत्यसोधक समाज एवं ज्योतिबा फूले की लीग।
  - छुआछूत की समस्या और डा० अम्बेडकर का प्रभाव
  - महात्मा गांधी का हरिजनोद्धार

- आदिवासी विद्रोह:
  - बिरसा मुंडा और ओरांव विद्रोह
  - रानी गिडालू और नागा समस्या।

Q.N. 5

Distinction between Interest Group and Pressure Group.

- Introduction:

Interest Group is a big phenomenon while pressure group has its limitations. Pressure Group herself is a interest Group but the basic distinction occur due to their tactices, i.e.

- Interest Group claims for their right into Court. While Pressure group feeds government through manipulated data's.
- Pressure Groups are more vocal than Interest Group. Pressure Groups do public opinion into their favour through Radio, Television.
- Pressure Group organises Seminar, Symposium, Speeches etc. Interest group less or little.
- Pressure Groups do rally, strike, lobbying for ~~their~~ their specific interests. Also does finance to political parties in Election for due favours.

हित समूह और दबाव समूह मे अंतर

- हितसमूह एक व्यापक अवधारणा / प्रघटना है जबकि दबाव समूह एक संकीर्ण व सुदृढ़ संगठन।
- दोनो को अपने हितों की पूर्ति के साधनो को लेकर विभेद है : —

- हित समूह अपने अधिकारों हेतु न्यायालय की शरण लेते हैं जबकि अमझार ही दबाव समूह मैनीपुलेटेड आंकड़ों के माध्यम से सरकार पर दबाव बनाते हैं।

- दबाव समूह, हित समूहों से अधिक मुखर होते हैं। दबाव समूह रेडियो, टेलीविजन इत्यादि के माध्यम से अपने पक्ष मे जनमत तैयार करते हैं।

- दबाव समूह सेमिनार, रैली, हड़ताल और लाबिंग के माध्यम से अपने विशिष्ट हितों की पूर्ति का साधन करते हैं। वे राजनीतिक दलों को अपने हितों की पूर्ति हेतु धन मुहैया भी कराते हैं। जबकि हित समूह बिखरा-बिखरा रहता है।

Q.10.6 Marxist view on Political Economy

Introduction.

Karl Marx / Engle's view on Changing. How due to Means of Production and forces of Production, mode of Production chang. Capitalism is an epoch production system and it has own historical reason. It will certainly ruin through its Contradictions.

- Structure of Social life
    - Base
    - Superstructure
- Causes of free Trade
    - Burgeoise class
    - Proletariate class
- Antonio Gramsci's view and Dependency theory.

राजनीतिक आर्थिकी पर मार्क्सवादी विचार

- प्रस्तावना

समाज मे उत्पादन के साधनो और उत्पादन की ताकतों मे परिवर्तन होने के साथ ही उत्पादन प्रणाली मे परिवर्तन आते हैं। (मार्क्स एवं एंगेल्स) पूंजीवाद एक युग विशेष की उत्पादन प्रणाली है जो कि अपने अन्तर्विरोधों से ध्वस्त हो जायेगी।

- सामाजिक जीवन की संरचना
    - आधार
    - अधिरचना
- मुक्त व्यापार का परिणाम, बुर्जुआ और सर्वहारा वर्ग का अंतर्विरोध गहराना।
- एंटोनियो ग्राम्शी और निर्भरता सिद्धांत

Q.N.7 Modern Approaches to the Study of Comparative Politics:

- Uses of psychological instrument to understand political behaviours started with Grahm Wallas 'Human Nature in Politics'. Also, The Process of Government written by Arthur Bentlay did use new methods. However after II.WW using of Scientific Method, Quantitative Methods Behavioural technique counts in Modern approach. Sociological and Marxian Method are also new and modern approaches into the study of Comparative Politics
- Characteristics of Modern Approach.
- Conclusion.
- मनोवैज्ञानिक तरीको से राजनीतिक व्यवहार को समझने का प्रथम प्रयास ग्राहम वालास के 'ह्यूमन नेचर इन पालिटिक्स' मे मिलता है। उसी प्रकार 'द प्रासेस ऑफ गवर्नमेंट' द्वारा आर्थर बेंटले ने नये तरीको को सामने रखा।
- द्वितीय ~~विश्व~~ विश्वयुद्ध के बाद से राजनीति विज्ञान मे

नये उपागमो और पद्धतियों पर जोर दिया जाने लगा गया। जिसे वैज्ञानिक पद्धति, गुणात्मक पद्धति, व्यवहारिक पद्धति इत्यादि नाम दिया गया।

- समाजशास्त्रीय पद्धति और मार्क्सवादी पद्धति को भी तुलनात्मक राजनीति के आधुनिक उपागमो मे रखा जाता है।
- आधुनिक उपागमो के लक्षण लिखिये।
- निष्कर्ष।

Q.N. 8

Chief Characteristics of Social Movements

- Introduction to Social Movement
- people participation and spontaneous leadership.
- Mass involvement and common goal.
- Loose Organisation
- It is a sign of a struggle against social evils.
- Demand of new ethics and value's.
- Conclusion. (New Education system and urbanisation are the causes for social Movement)

- सामाजिक आंदोलन कुछ ऐतिहासिक परिवर्तनों के संदर्भ मे जन्म लेते है।
- कुछ प्रचलित रीति- रिवाज़ो, नियमो, रूढ़ियों से असंतुष्ट लोग नये मूल्यों एवं आचार की स्थापना करना चाहते है।
- उसकी जड़ मे नई शिक्षा व्यवस्था और शहरीकरण भी है।
- लोग स्वभावतः नये मूल्यों के लिए एक संकल्प ले लेते है।
- सामाजिक आंदोलन मे नेतृत्व स्वभावतः पनपता है।
- आम लोगों की सहभागिता रहती है।
- निष्कर्ष

Dr. R.P. Yadav
Asst. Professor.
Dept. of Political Science
GGV.